Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love
Vol. 011 Issue 10 OCTOBER 2025 Pages 24 A.S. Rs 100

Annakut Mahotsav at Megarugas Hall, Chandivali - 2025

P.P. Dinkarbhai's 81st Pragatya Din Celebration - Chicago

सत्संग समाचार

P.P. Dinkarbhai's 81st Pragtya Din celebration at Chicago

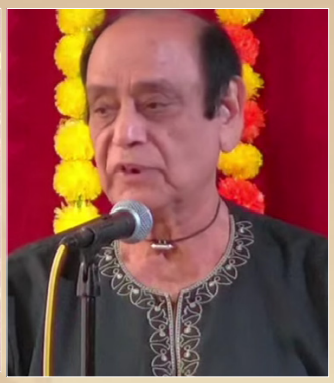

❊ शुक्रवार, दि. ३ और शनिवार, दि. ४ अक्टूबर को प.पू. दिनकरभाई का ८१वाँ प्रागट्यदिन गुरु प्रसन्नता पर्व के रुप में DesPlaines मंदिर में प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई तथा अनुपम मिशन के पू.डॉ. जीतुभाई तथा पू. जयेशभाई, पू. कौशिकभाई और स्थानिक हरिभक्तों की हाजरी में भक्तिभाव से मनाया गया।

दि. ३ को प्रथम सत्र में प.भ. फाल्गुनीबहन, प.भ. वाधवा साहबजीने दिनकरभाई के विशिष्ट गुणों का दर्शन कराया।

इसी सत्र में अश्विनभाई तथा घनश्यामभाई का अमृतपर्व भी मनाया गया। सभी संतभाईयोंने उन्हें माहात्म्यदर्शन से अंकित प्रशस्तिपत्र अर्पण किये।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि यहाँ जो भी हरिभक्तों है उन्होंने अपना पूरा जीवन सत्संग और दिनकरभाई के पास समर्पित कर दिया है। गुरुहरि काकाजी महाराज को जितना धन्यवाद दे इतना कम है, क्योंकि उनकी कृपा से हमें दिनकरभाई की भेट मिली। दिनकरभाई Living Legend है। उनके अंदर से जो भी विचार आते है वह निर्गुणभाव के रुप में होते है। दिनकरभाई यानि नम्रता का स्वरुप। उन्होंने कईं युवकों को यहाँ रहने का सरल कर दिया। ये युवकों छोटे छोटे थे तब उन्होंने और प.पू. महेन्द्रबापुने शुक्रवार की सभा शुरु की थी जो आज भी बरकरार है। एकबार दिनकरभाई को Flight पकडनी थी और एक युवकने उन्हें कोई सवाल पूछा तो उसके प्रश्न का निराकरण करने करीब १ घंटा धुन की। हमको चिंता हो रही थी कि Flight छूट जायेगी, लेकिन हम समय पर Airport भी पहुँचे और उन्होंने Flight भी ली। उनकी धीरज की हम कल्पना नहीं कर सकते। सुनृत में सहनशीलता का जो मुद्दा बताया है वह उन्होंने सिद्ध किया है। कोई भी बात होती है तो वे उसकी जड तक जाकर सत्य बात हमें बताते है।

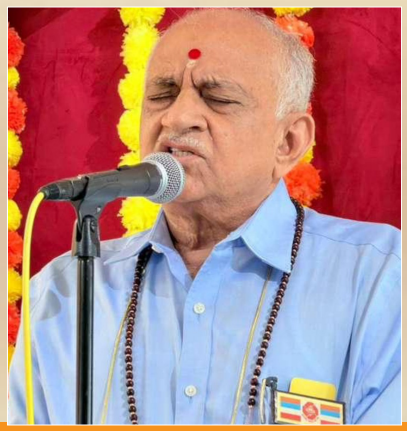

आज हम अश्विनभाई और घनश्यामभाई का भी प्रागट्यदिन मना रहे है। घनश्यामभाई का समर्पणभाव अद्भुत है। अपनेआप को भूलकर हरपल मंदिर की सेवा ही की। ड्रामा में जो उन्होंने कार्य किया

P.P. Dinkarbhai's 81st Pragtya Din celebration at Chicago

उससे सभी गुणातीत स्वरुपों का राजीपा सहज ही मिल गया। अश्विनभाई सुबह ठाकोरजी को जगाने से लेकर रात को वापस शयन कराने तक के सभी सेवा आज भी उतने ही भाव से करते है। इस उम्र में भी वे गाडी चलाने की सेवा में कभी भी ना नहीं बोलते। अश्विन यानि जिसको स्व का भाव ही नहीं है। तो ऐसे गुरु प्रसन्नता पर्व पर हम हमारे गुरु की प्रसन्नता प्राप्त कर ले वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि दिनकरभाई, अश्विनभाई और घनश्यामभाई में जो सामान्य गुण यानि सेवकभाव। मैं तारदेव मंदिर आया तब देखा कि अश्विनभाई सबसे पहले उठकर सेवा में जुड जाते थे। देर रात को भी उनके फोन चालु रहते है। घनश्यामभाई को भी उम्र का भाव नहीं है। जब Computer में सारे कार्य होने लगे तो इस उम्र में सन् २००३ में उन्होंने वह सीखा। जब हम स्वामी की बातों का Recording करते थे, तब उसका पूरा कार्य करना, Retake करना, तो वह सेवा भी उन्होंने बहुत भावपूर्वक की। जिसका पूरा लाभ आज सभीको प्राप्त हो रहा है। हर समैया में उन्होंने सेवा की है।

दिनकरभाई के लिये किशोरभाई गिल्डरने जो प्रार्थना लिखी थी वह उन्होंने पढी।

प.पू. दिनकरभाई ने आशीष देते हुए कहा कि हरेक को भगवान का संबंध है। स्वामिनारायण भगवानने बताया है कि रामानंदस्वामीजी के दर्शन हो जायेंगे तो मैं वापस तप करने चला जाऊँगा। तो रामानंदस्वामीजीने कहा कि जंगल में जाकर वृक्ष के नीचे तप करने से अच्छा सत्संगरुपी कल्पवृक्ष में रहकर सत्संग का उत्थान करो। वैसे हम ऐसे सत्संगरुपी कल्पवृक्ष के नीचे बैठे है। सत्संग यानि सबसे बडा सत्कर्म। तो हम ऐसे सत्संग का लाभ लेते है वह बहुत बडी बात है। आज हम अश्विनभाई और घनश्यामभाई का प्रागट्यदिन मना रहे है। हमारी माताजी दिवालीबा १०८ साल तक पृथ्वी पर थी। तो वैसे दोनों भाईयों की सेहत अच्छी रहे और काफी समय तक पृथ्वी पर रहे वही प्रार्थना।

दि. ४ अक्टूबर को द्वितीय सत्र में प.भ. मेलिनीबहन द्वारा प्रश्न-उत्तर का Session हुआ। इस Panel में प.भ. हिरलबहन शाह, प.भ. ओमिलीबहन, प.भ. क्रीशभाई से इस सत्र की शुरुआत हुई। आप आध्यात्मिकता के साथ कैसे जुडे? आपको सत्संग कैसे हुआ? सत्संग में रहकर स्वाध्याय-भजन करने के बाद आपमें क्या बदलाव आये? जैसे कईं प्रश्नों का उत्तर सभीने अपने स्वानुभाव से बतायें। इस Session से सभीको बहुत जानकारी और प्रेरणा मिली और दिनकरभाई का भी विशिष्ट माहात्म्य दर्शन हुआ।

उसके बाद Secret Snapchat जिसमें दिनकरभाई के कुछ हरिभक्तों की स्मृतिरुपी तस्वीर के सभीने दर्शन किये और आनंद किया। हर तस्वीर के पीछे जो प्रसंग थे वह हरिभक्तोंने स्वयं आकर बताये।

P.P. Dinkarbhai's 81st Pragtya Din celebration at Chicago

प.पू. वशीभाई ने कहा कि फोटोग्राफ का ये सत्र बहुत अच्छा रहा। गुरुहरि काकाजीने कहा था कि दिनकरभाई जैसे पाँच तैयार हो जाये तो पूरे अमरिका को सत्संग हो गया ऐसा कहा जायेगा। अखंड ब्रह्मरुप की स्थिति में रहना उसके लिये खुद की इच्छा छोडकर गुणातीत संत की मर्जी अनुसार जीवन जीना वही है। Each soul is potentially divine. दिनकरभाई ऐसा मानते है कि हर जीव को दिव्यता में परिवर्तित करने की सेवा है वह मुझे मिली है। तो दिनकरभाई के प्रागट्यपर्व पर हम संकल्प करें कि गुरु प्रसन्नता पर्व यहाँ चल रहा है तो अगले साल उनका प्रागट्यपर्व आने तक वो प्रसन्नता के पात्र हम बन जाये वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि आज जो Panel Session हुआ उसमें जो हरिभक्तोंने उत्तर दिये वे काकाजी के स्वधाम जाने के बाद सत्संग से जुडे है। उनकी बातों में दिनकरभाईने जो मार्गदर्शन दिया है उसकी खुश्बु इन हरिभक्तों में से सहज ही आ रही थी। तो ऐसे दिनकरभाई का प्रागट्यदिन हम मना रहे है। वो जो कहते है हमें वही करना है। उसे समझके करेंगे तो ऐसे गुणातीत स्वरुपों का राजीपा सहज मिल जायेगा। वे छोटे छोटे प्रसंग में भी हर किसीको सत्संग से जोडते है। उनकी हमेशा यही चाह होती है कि हम निरंतर स्वामिनारायण का भजन करें। दिनकरभाई हमें सीखाते है कि हम जो भी बोलते है, करते है उसमें प्रभु के साथ का संबंध ज्यादा दृढ करें। वे हमें जाग्रतता सीखाते है। हरेक क्रिया प्रभुमय होनी चाहिए। दिनकरभाईने यहाँ के हरिभक्तों में सत्संग का ज्ञान जो फैलाया है वो उनके बर्ताव में सहज दिखता है। **गुणातीतानंदस्वामी की प्र. २/६२ बात में कहा है कि भगवान राजी होते है तो सभी काम होते है।** तो वैसे हमें दिनकरभाई को प्रसन्न कर लेना है। इस बात में स्वामीने जो चार उपाय बताये वह बताता हूँ।

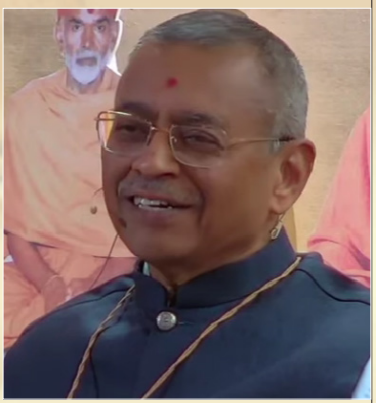

P.P. Dinkarbhai's 81st Pragtya Din celebration at Chicago

(१) बडे संत को जो चाहिए वो दे देना। **(२)** उनकी देह की सेवा कर लेनी। **(३)** उनके आगे हाथ जोडकर प्रार्थना करनी। **(४)** उनकी अनुवृत्ति समझे।

दिनकरभाईने हमें यही तालीम दी है कि परब्रह्म की भक्ति करके ब्रह्मरुप हो जाये। आज यहाँ देखे तो बहुत सारे दिनकरभाई युवकों के रुप में तैयार हो गये है ऐसा दिखता है। तो दिनकरभाई की ईच्छा के मुताबिक हम जीवन जीये वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने आशीष देते हुए कहा कि Panel Talk Session बहुत अच्छा रहा। मेलिनीबहन को धन्यवाद है। उन्होंने जो सवाल पूछे उससे हमें सीखना है। वे भावनाबहन के संपर्क से सत्संग से जूडे। मेलिनीबहन को भावनाबहन Abu Dhabi Airport पर लाईन में खडे थे तब मिले थे। भावनाबहन से मिले

तब उन्होंने उनको मैत्री मिलन महोत्सव में पवई आने के लिये आमंत्रित किया। वो खास पवई आयी और महापूजा का लाभ लिया। तब सभी आरती में कुछ सेवा रख रहे थे। मेलिनीबहन के पास केवल ५० डॉलर की एक ही नोट थी, तो उन्होंने वह सेवा में रख दिये। तो उस अद्‌भुत सेवा से आज वे सत्संग में बहुत आगे बढ गये। भगवान हमारी छोटी से छोटी सेवा भी ग्रहण करते है। हमें सकारात्मक विचार रखकर सेवा का अच्छा ही लाभ होगा ऐसा सोचना चाहिए। लाभ नहीं भी होता तो भी वह भगवान की मर्जी ही है ऐसा मानना, लेकिन नकारात्मक तो बिलकुल भी सोचना नहीं है। हम बहुत भाग्यशाली है कि हम ऐसे आध्यात्मिकता से जुडे है। तो हम आनंद करते रहे वही प्रार्थना।

अंतिम सत्र में माहात्म्यदर्शन की शृंखला में प.भ. केतनभाई शाह, प.भ. स्वप्नीलभाई शाह, प.भ. अक्षयभाई लवगडे, प.भ. पंकजभाई शाहने स्वानुभाव के प्रसंग बताकर दिनकरभाई के विशिष्ट गुणों का दर्शन कराया।

उसके बाद सभी संतभाईयों तथा बहनोंने प.भ. दासकाका-प.भ. ताराबहन और प.भ. रतिमासा को इतने सालों की सेवा-सत्संग की सराहना कर हार पहनाकर शाल तथा स्मृतिभेट अर्पण की।

साथ ही पू. महालक्ष्मीबहन (मोटीबहन) का ९८वाँ प्रागट्यदिन, प.भ. हर्षाबहन तथा प.भ. सुशीलाबहन को उनके अमृत महोत्सव निमित्त खेस और माला अर्पण हुए।

अनुपम मिशन के वडील संतभाई पू. जयेशभाई ने कहा कि हम बहुत भाग्यशाली है कि हम ऐसे गुणातीत स्वरुपों की गोद में बैठे है। स्वामिनारायण भगवान के आशीर्वाद से ही शिकागो जैसे शहर में दिनकरभाईने अद्‌भुत सत्संग खडा किया है। गुरुहरि काकाजी जैसे हरपल धुन करवाते थे वैसे यहाँ भी दिनकरभाईने

हरेक परिस्थिति में धुन ही करवाई है। काकाजी का वर्णन हम कर सके ऐसे शब्द नहीं है। उनके प्रवचन सुनते है तो ऐसा लगता है कि ये खत्म ही ना हो। ऐसे काकाजीने दिनकरभाई के रुप में पारसमणि हमें भेट में दिया है। तो जितना हो सके उतना ज्यादा उनका समागम करना चाहिए। हमें उन्हें बिलकुल भी नाराज नहीं करना चाहिए। तो हे दिनकरभाई, हम सत्संग में ज्यादा आगे बढे और नम्रभाव से सभी की सेवा करें वही प्रार्थना।

P.P. Dinkarbhai's 81st Pragtya Din celebration at Chicago

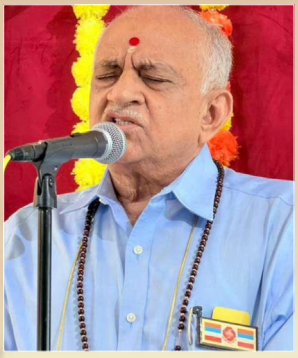

प.पू. वशीभाई ने कहा कि दिनकरभाई की विशिष्टता यह है कि वे खुद का नहीं, लेकिन अन्य गुणातीत स्वरुपों तथा हरिभक्तों का प्रागट्यदिन मनाते है। भगवान पृथ्वी पर प्रगट होते है लेकिन हम उन्हें पहचान नहीं पाते। गुरुहरि काकाजी महाराज को धन्यवाद है कि उन्होंने योगीबापा की सही पहचान हमें करवाई। तो अब हमें दिनकरभाई जैसे गुणातीत स्वरुप की पहचान कर लेनी है। शिकागो की धरती पावन हो गई क्योंकि यहाँ दिनकरभाई जैसे स्वरुप सत्संग का कार्य कर रहे है। तो आज के दिन हम जो भी मांगेंगे वह जरुर मिलेगा। तो कोई भी सामान्य चीजें न मांगकर आध्यात्मिकता में हमारी प्रगति हो ऐसा आशीर्वाद मांगना। ऐसे संत के साथ संबंध होता है तो जीवभाव टल जाता है और ब्रह्मभाव की यात्रा शुरु हो जाती है। तो हे दिनकरभाई, अगर आप सचमुच राजी हो तो हम ऐसे आपके Instrument बन जाये वही प्रार्थना।

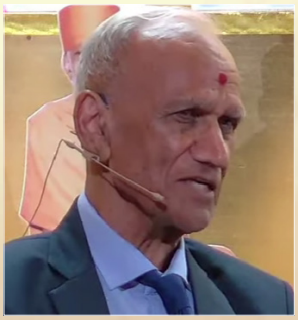

अनुपम मिशन के पू. डॉ. जीतुभाई ने कहा कि हम जहाँ भी जाते है गुणातीत संत हमारे साथ हरपल होते है। उनकी सच्ची पहचान हो जाना वही Ph.D. की डिग्री प्राप्त करने समान है। संतभगवंत साहेबजी, दिनकरभाई सभी एक ही बात कहते है कि हमें निर्दोषबुद्धि रखकर सभी की सेवा करनी है। तो दिनकरभाई की सेहत अच्छी रहे और उनका १००वाँ प्रागट्यदिन हम मनाये वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि तारदेव मंदिर में सन् १९८६ में दि. ३ फरवरी को गुरुहरि काकाजी महाराजने खास महापूजा करवाई थी। तब काकाजीने दिनकरभाई को अपनी प्रिय वस्तु यानि शास्त्रीजी महाराज की अस्थि में से छोटा अंश दिनकरभाई को देते हुए कहा कि अभी से आप हमारे भागीदार हुए। तो उनके पास जो विशिष्ट शक्ति है वह काकाजी की प्रसन्नता से उन्हें मिली है। उनके अंदर भगवान का तत्व काम कर रहा है। दिनकरभाई जो संकल्प करें वह सत्य हो जाता है। आशीर्वाद तो मिलता ही है लेकिन उसे ग्रहण करने की पात्रता होनी जरुरी है। ऐसे वे काकाजी के अनोखे पात्र है। दिनकरभाई के तीन मुख्य

गुण हमें जीवन में उतारने है। **(१) Positivity** – कैसा भी प्रसंग बने वे हमेशा सकारात्मक सोच रखते है। **(२) भजनिक** – कभी किसीका भी फोन आयेगा तो मंत्रजाप कराते है। हर कोई भजन का ज्यादा सहारा ले वो उनकी मुख्य बात होती है। **(३) अनुवृत्ति** – बडे सत्पुरुष की अनुवृत्ति जानकर हमें आगे बढना है। दिनकरभाई केवल काकाजी के मर्जी के मुताबिक ही जीवन जीते है।

गुरु प्रसन्नता पाँच बात में है। **(१) नियम-धर्म (२) सेवा (३) महिमा (४) आत्मबुद्धि (५) दृष्टि** हमारी दृष्टि केवल गुरु की ओर होनी चाहिए। तो ऐसी पाँच बातें हमें जीवन में उतारनी है। प्रसन्नता तीन प्रकार की होती है। **(१) राजीपा (२) अंतर की प्रसन्नता** – छोटी से छोटी सेवा भाव से करेंगे तो बडे पुरुष की अंतर की प्रसन्नता मिलती है। **(३) सिद्धांतिक प्रसन्नता** – हमें जो प्रगट स्वरुप मिले है उनमें प्रभु अखंड है और ब्रह्मरुप होकर परब्रह्म की भक्ति हमें करनी है। ऐसी सिद्धांतिक प्रसन्नता का आनंद अलग ही होता है। तो हे दिनकरभाई जैसे आपने काकाजी को प्रसन्न किया वैसे हम आपकी प्रसन्नता के पात्र बने वही प्रार्थना।

पू. महालक्ष्मीबहन (मोटीबहन)ने कहा कि दिनकरभाई के प्रागट्यदिन के आसपास मेरा भी जन्मदिन आता है, उसका मुझे बहुत फायदा हो जाता है। जिससे बहुत सारे हरिभक्तों को मिलने का मौका मिलता है। काकाजी-पप्पाजी-सोनाबा और ज्योतिबहन के संकल्प मात्र से आज बहनों का कार्य सफल और सरल हो पाया है। हमको तो कुछ करने की जरुरत पडी ही नहीं है। सभी केन्द्रो के संतभाईयों, संतबहनों को याद भी करेंगे तो हमारा काम हो जायेगा। स्वामिनारायण का जाप तो हर कोई करता था, लेकिन अक्षरपुरुषोत्तम का नाम कोई लेता नहीं था। गुणातीत स्वरुपोंने वह कार्य किया। तो हे गुणातीत स्वरुपों, आपके आशीर्वाद हम पर बनाये रखे वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने आशीष बरसाते हुए कहा कि भरतभाई-वशीभाई भारत से खास हमारे प्रागट्यदिन के लिये आये उसके लिये उनको धन्यवाद देते है। आज के दिन साहेबजी, प्रेमस्वरुपस्वामीजी, गुरुजी और अन्य गुणातीत स्वरुपोंने बहुत अच्छे आशीर्वाद भेजे है। सन् १९७३ में गुरुहरि काकाजी महाराज से हम मिले और **Love at First Sight** हो गया। जैसे योगीबापाने कहा था कि आपके कपडे नहीं, लेकिन हृदय भगवा करना है। वैसे इस आध्यात्मिकता में अंतर से हम भगवान के साथ सहज ही जुड जाना है। स्वामीजी कहते थे कि वशीभाई महापूजा करते है तो उसमें महाराज स्वयं प्रगट होते है। वैसे भरतभाई जब धुन करते है तो एक दिव्य शक्ति काम करती है और भगवान प्रगट होते है और उनके द्वारा हमारी प्रार्थना सुनते है। ये आध्यात्मिकता के अलग अलग Level है। वह हम हमारी सामान्य दृष्टि से नहीं देख सकते। ऐसे गुणातीत स्वरुपों के संबंध में हम जितना ज्यादा रहेंगे उतना अक्षरधाम का सुख सहज ही प्राप्त हो जायेगा। तो हम आनंद करते रहे वही प्रार्थना।

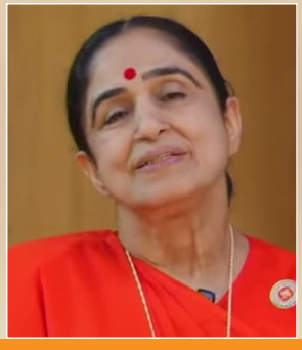

दिल्ली से प.पू. आनंदीदीदी ने कहा कि हम देह से यहाँ दिल्ली में है, लेकिन मन से शिकागो में ही है। स्वा.वा.प्र. ३/३४ में कहा है कि जिसके दर्शन से छाती में ठंडक हो, ऐसा उसमें कौन-सा गुण होता है कि उसे देखकर छाती में ठंडक हो जाये? सभी जगह लोगों की भीड तो बहुत है, लेकिन जिसके दर्शन मात्र से अंतर में ठंडक हो जाये ऐसे बहुत कम दिखने मिलते है। आज गुरुहरि काकाजी महाराज को उनके इन शिष्यों को देखकर अंतर में बहुत ठंडक होती

होगी। तो वैसे हमारे गुरु को अंतर में ठंडक हो जाये ऐसा हमें तैयार हो जाना है। सत्पुरुष के गुण मुमुक्षु में तब आते है जब उनको अखंड निर्दोष तथा सर्वज्ञ माने और उनसे तनिक भी अंतराय न रखे। काकाजी से स्थूल रुप से दूर रहकर गुरुजीने दिल्ली में और दिनकरभाईने अमरिका में सत्संग आगे बढाया। काकाजी स्वधाम गये तब भरतभाई-वशीभाई की उम्र ज्यादा नहीं थी, फिर भी सभी अन्य भाईयों के साथ मिलकर पवई का कार्य अच्छे से संभाल लिया। इन सभी सत्पुरुषोंने काकाजी को अंतर्यामी मानकर जो कार्य किया उससे वे स्वयं काकाजी का स्वरुप बन गये। उनके संपर्क में जो भी आता है उसे अनुभूति होती है कि हम काकाजी को ही मिल रहे है। दिल्ली, पवई, शिकागो में करीब ७०% हरिभक्तोंने काकाजी के दर्शन किये ही नहीं है। लेकिन प्रगट स्वरुपोंने काकाजी का बहुत महिमागान करके उन्हें प्रगट ही रखें है।

अंत में प्रागट्यदिन निमित्त केक कटिंग हुआ।

P.P. Dinkarbhai's 81st Pragtya Din celebration at Chicago

शनिवार को पूर्णाहुति सत्र के पहले प.भ. निर्भिकभाई-प.भ. बिनलबहन के घर संतभाईयोंने पधरामणी की।

प.भ. पुष्पाबहन द्वारा ड्रायफूट का विशिष्ट हार लिंकन के प.भ. सुनीलभाई- प.भ. विराटभाईने दिनकरभाई को पहनाया। साथ ही अनुपम मिशन की ओर से दिनकरभाई को हार अर्पण हुआ।

At Nirbhikbhai's home

दि. ५ की सुबह Marion street मंदिर में पू. महालक्ष्मीबहन (मोटीबहन) और उनके सुपुत्र प.भ. देवाभाई, प.भ. सुजुबहन की ओर से प.भ. सहजभाई- प.भ. मेगनबहन की शादी निमित्त विशिष्ट महापूजा का आयोजन हुआ। महापूजा के बाद वशीभाई, अश्विनभाई, प.भ. मिलापभाई- प.भ. रिद्धिबहन और प.भ. मुकेशभाई पेरिस के लिये निकले।

Special Mahapooja at DesPlaines Temple

शाम को दिनकरभाई और भरतभाईने Downtown में प.भ. परेशभाई- प.भ.डॉ. जिगिशाबहन के घर पधरामणी की। उसके बाद प.भ.डॉ. सपनभाई-प.भ.डॉ. रचनाबहन के घर भी पधारे। वहाँ दिनकरभाई के खास मित्र तथा सपनभाई के पिताजी प.भ. सुरेशभाई से भी मिले और सभीके साथ भोजन करके सत्संग किया।

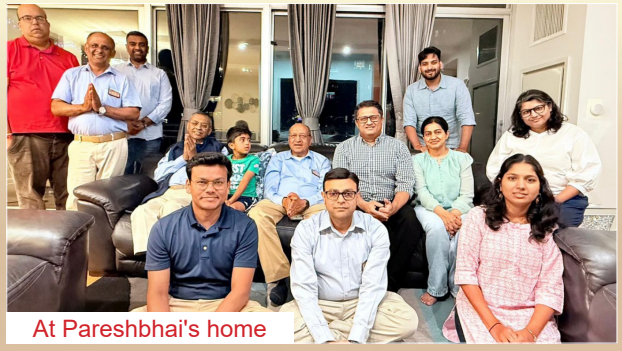
At Pareshbhai's home

At Dr. Sapanbhai's home

दि. ६ की सुबह प.भ. राजुभाई-प.भ. स्मिताबहन, कुशभाई, धाराबहन के घर भजन-सत्संग करके भोजन लिया। उसके बाद प.भ. अशोकभाई-प.भ. किरणबहन के घर खास उनकी सेहत देखने गये। उसके बाद प.भ. भावेशभाई के नये घर प्रार्थना-पूजा करके उसी दिन शाम को डॉ. महेन्द्रभाई मर्चन्ट के पुत्र प.भ. संकल्पभाई-प.भ. किंजलबहन के घर रात्रि के भोजन के लिये पधारे। वहाँ सत्संग करके रात्रि को वापस घर आये।

At Rajubhai's home

At Ashokbhai's home

At Bhaveshbhai's home

At Sankalpbhai's home

At Tusharbhai's home

At Vandanbhai's home

दि. ७ को गुरुहरि काकाजी महाराज के स्मृति दिन निमित्त Online भजन संध्या की। उसके बाद प.भ. तुषारभाई-प.भ. नीशाबहन चोटलिया के घर कईं व्यंजनो का प्रसाद ग्रहण करके वापस घर आये। उसके बाद प.भ. वंदनभाई-प.भ. शीतलबहन तथा प.भ. अनामीबहन के घर पधरामणी की। रात्रि भोजन के लिये सभी प.भ. राकेशभाई-प.भ. तेजलबहन, प.भ. अक्षरभाई के घर पहुँचे और सत्संग करके आनंद किया।

At Rakeshbhai's home

उसी दिन पेरिस में शरदपूर्णिमा की विशिष्ट सभा प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई के सानिध्य में प.भ. जस्मीनभाई के घर हुई।

Sharad Purnima celebration at Jasminbhai's home, Paris

❊ मंगलवार, दि. ७ अक्टूबर की भजन संध्या गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति के साथ 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में भक्तिभाव से Online हुई। प.पू. वशीभाईने पेरिस से पूरी भजन संध्या का संचालन किया।

इसी अवसर पर सूरत के नारायण स्कूल के प्रिन्सिपाल डॉ. रीचाबहन 'अक्षरधाम', स्वामिनारायण मंदिर, पवई पधारे थे, संतबहनोंने शाल पहनाकर उनका अभिवादन किया।

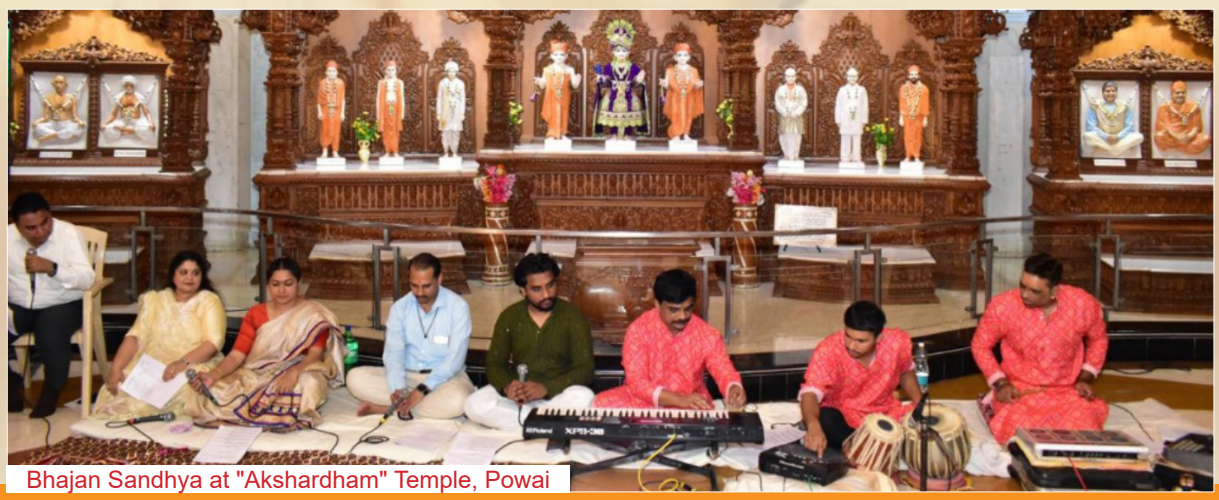

Bhajan Sandhya at "Akshardham" Temple, Powai

Felicitation of Dr. Richaben

शिकागो से प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि शरदपूर्णिमा के दिन बहुत अच्छी भजन संध्या हुई। भाव में भगवान है। खुद के पास जो कुछ भी है वह भगवान के लिये अर्पण करना वह सबसे बडी बात है और वह प्रभु ग्रहण करते है। गुरुहरि काकाजी महाराज कहते थे कि भजन, भक्तों का भाव और भगवान का कार्य वे स्वयं ही करते है। उनका सबसे बडा गुण यानि स्वरुपलक्षी सरलता। हम जितनी ज्यादा सरलता हमारे जीवन में दृढ करेंगे उतना अंतर में आनंद रहेगा। सरलता गुणों का राजा है। स्वामीजी, प्रेमस्वरुपस्वामीजी, दिनकरभाई के जीवन में सरलता का सहज ही दर्शन होता है। सरलता, सर्वदेशीयता और सुहृदभाव हमें दृढ करना है। तो ऐसे गुणातीत स्वरुपों के गुणों को आत्मसात करें और सही अर्थ में गुरु प्रसन्नता पर्व मनाये वही प्रार्थना।

शिकागो प.पू. दिनकरभाई ने आशीष देते हुए कहा कि गुणातीतानंदस्वामीने कहा है कि गंगा नदी सभीको पवित्र करती है। तो गंगाने बोला कि मैं सभीका पाप लेकर खुद पवित्र कैसे रह सकुं? तो भगवानने कहा कि सभी संत आपके वहाँ स्नान करेंगे तो आप पवित्र हो जाओगे। तो ऐसे बडे संत हमारे घर पधारे तो सबकुछ सहज ही पवित्र हो जाता है। सरलता वही साधुता है। काकाजी सरलता, तरलता ऐसे शब्द बहुत बोलते थे। तो हम अखंड आनंद करते रहे वही प्रार्थना।

उसके बाद पवई मंदिर के सभी संतभाईयों की ओर से पू. हरखचंदभाईने उसी दिन शिकागो से पधारे पू. अश्विनभाई को हार पहनाकर उनका स्वागत किया। उन्होंने शिकागो की यात्रा के अपने कुछ प्रसंग बताये।

वशीभाईने पेरिस में दि. ८ को प.भ. राकेशभाई-प.भ. अंकिताबहन के घर पधरामणी करके प.भ. हर्षदभाई-प.भ. पद्माबहन के घर दोपहर का भोजन किया।

At Rakeshbhai's home, Paris

At Harshadbhai's home, Paris

Waukegan मंदिर में पधरामणी करके दिनकरभाई, भरतभाई प.भ. पंकजभाई-प.भ. हर्षाबहन के घर पधरामणी की।

At Waukegan Mandir, Chicago

At Pankajbhai's home

दि. ९ को पेरिस में वशीभाई, किशोरभाई मास्टर्स प.भ. मगनभाई मैसुरिया को मिले और आनंद किया। उसके बाद प.भ. भीखुभाई-प.भ. मीनाबहन की पुत्री प.भ. सलोनीबहन(Sylvie) पटेल को CA की डिग्री प्राप्त करने हेतु विशिष्ट सभा का आयोजन हुआ। उसके बाद प.भ. जयेशभाई-प.भ. प्रीतिबहन के घर पधरामणी की।

दि. १० को भरतभाई भी पेरिस पधारे। सबसे पहले प.भ. रायभाई-प.भ. पन्नाबहन के घर पधरामणी करके सत्संग किया।

At Maganbhai's home, Paris

At Bhikhubhai's home, Paris

At Pritiben's home, Paris

At Pannaben's home, Paris

उसी दिन पेरिस मंडल द्वारा विशिष्ट अन्नकूट मनाकर वे भारत के लिये रवाना हुए।

New Year and Annakut celebration at Paris

Bhajan Sandhya - Paris

इस तरह करीब एक महिने की यात्रा दौरान ३३ हजार, ३५१ किलोमीटर विचरण किया और हरिभक्तों को सत्संग-महापूजा का लाभ दिया। भारत में सभीने उनकी अच्छी सेहत की प्रार्थना की जिससे उनकी सेहत अच्छी रही। दिनकरभाईने भी पवई के संतभाईयों की सभी व्यवस्था अच्छे से की। दि. १० अक्टूबर की देर रात भरतभाई-वशीभाई भारत लौटे।

❊ **शुक्रवार, दि. १० अक्टूबर, शरदपूर्णिमा के मंगलदिन अ.मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का २४१वाँ, प.पू. दिनकरभाई का ८१वाँ, पू. अरुणभाई का ७२वाँ प्रागट्यदिन, ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी, प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी और अन्य संतों का ६१वाँ भागवती दीक्षा दिन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में संतभाईयों, संतबहनों, हरिभक्तों तथा गुणातीत ज्योत से पू. रसीलाबहन, पू. भारतीबहन और अन्य संतबहनों की उपस्थिति में भक्तिभाव से मनाया गया।**

'ऐसे गुणातीत संत को पहचानना वही आत्यंतिक ज्ञान है...' इस विषय पर माहात्म्यदर्शन की पू. हर्षितभाई, पू. संदीपभाई और प.भ. प्रसादभाई पाटीलने सभी गुणातीत स्वरुपों तथा अरुणभाई के विशिष्ट प्रसंग स्वानुभाव से बताये।

Sharad Purnima celebration at "Akshardham" Temple, Powai

पू. भारतीबहन ने कहा कि मैं योगीजी महाराज का प्रवचन सुन रही थी उसमें उन्होंने कहा था कि आप सब अंग्रेजी सीख जाना, आगे जाकर परदेश में भी सत्संग होगा। वो योगीबापा का संकल्प आज सत्य हो गया है। जैसे पिता आम का पेड बौता है और उसके पुत्र को उसका फल मिलता है, वैसे हमको तैयार आम मिल गया है। रामचंद्रजी और कृष्ण भगवान प्रगट हुए लेकिन उस समय उन्हें किसीने पहचाना नहीं। आज उनका महिमागान हर जगह हो रहा है। वैसे स्वामिनारायण मंत्र हर जगह फैल चुका है। हमें दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई के रुप में चिंतामणी मिल गई है तो उसकी किमत करें। प्रसंग तो हर किसीको आते ही है, लेकिन हमें नकारात्मकता में न जाकर, खुद के मन का छोडकर गुरु को राजी कर लेना है। ये सब गुणातीत स्वरुपों हमारे बहुत परिश्रम करते ही रहते है। तो भगवान सभीको सद्बुद्धि दे और सुखी रखें वही प्रार्थना।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि भगवान की सच्ची पहचान हो जानी वह बहुत बडी बात है। राधा-कृष्ण, सीता-राम, शिव-पार्वती की पहचान आज सभीको हो रही है। गुरुहरि काकाजी महाराज को धन्यवाद है कि योगीजी महाराज पृथ्वी पर प्रगट थे तब उनकी पहचान करा दी। आज हरिप्रसादस्वामीजी और प्रेमस्वरुपस्वामीजी का दीक्षादिन मना रहे है। प्रेमस्वरुपस्वामीजीने भी काकाजी की मर्जी जानकर समर्पणभाव से सेवा की। हमारी नजर बहुत सिमित है इसलिये प्रगट स्वरुप को पहचान नहीं पाते। सत्संग करने में कभी भी आलस नहीं करना चाहिए। काकाजी अमरिका, लंडन जैसे देश में गये तो सत्संग हो गया और दिनकरभाई जैसे गुणातीत संत हमें भेट में मिल गये। आज अरुणभाई के रुप में बहुत सारे युवक तैयार हो रहे है। मंदिर भक्तों के भजन से जीवंत रहता है। तो ब्रह्मरुप होकर हम परब्रह्म की भक्ति करते हो जाये वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि संत का प्रागट्यदिन हमारे लिये आनंद का दिन होता है। भगवान के प्रागट्यदिन पर हम उपवास करते है, लेकिन गुणातीत संत के प्रागट्यदिन पर हम मिष्ठान खाकर उत्सव मनाते है। गुणातीतानंदस्वामी और दिनकरभाई में जो सामान्य बातें है मैं बताता हूँ। **(१)** कोई भी कार्य आये तो पहले भजन करों। **(२)** प्रभु की शक्ति काम करती ही है। **(३)** नियम-धर्म में रहो। आज्ञा का पालन करेंगे तो सुखी रहेंगे। स्वार्थ की भावना से कुछ भी करेंगे तो कोई फायदा नहीं होगा। **(४)** हमें हरेक में गुण ही देखना है, ऐसी समझ दृढ करनी है।

अरुणभाई यानि सेवामूर्ति, जो सेवा के बिना रह नहीं सकते। जिसकी मिसाल नहीं दे सकता ऐसी सेवा उन्होंने की। उन्होंने १४ साल अखंड गुरुहरि काकाजी की सेवा की। प्रेमस्वरुपस्वामीजीने पाँच बातें जीवन में लागु करने की आज्ञा की है। **(१) भूल जाना। (२) छोड देना। (३) झूक जाना। (४) सहन कर लेना। (५) पीघल जाना।** वह करेंगे तो आज स्वामीजी और उनका दीक्षादिन सही अर्थ में मनाया कहा जायेगा। तो हम हरपल सुखी रहे वही प्रार्थना।

आज के इस मंगलपर्व पर ठाकोरजी की पाँच आरतीयाँ भी हुई। उसके बाद सभीने रास-गरबा करके आनंद किया। अंत में सभीको दूध-पोहा का प्रसाद भी मिला।

Sharad Purnima celebration at "Akshardham" Temple, Powai

❊ रविवार, दि. १२ अक्टूबर को जलाजा फाउन्डेशन की ओर से जे.पी. शेट्टीजीने 'Sardar Patel Run for Unity" Hiranandani Gardens के वहाँ आयोजित किया था, उसमें प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई और संतभाईयोंने उपस्थित रहकर आशीष दिये और सभीका उत्साह भी बढाया। इस समारोह में माननीय संसद सभ्य श्री. जगदंबिका पालजी अतिथि विशेष के रुप में पधारे थे। उन्होंने भी भरतभाई-वशीभाई को शाल अर्पण करके उनका अभिवादन किया।

At Sardar Patel Run for Unity, Powai

❊ विक्रम संवत २०८१ के दिवाली पर्व के उत्सव के प्रथम चरण में शनिवार, दि. १८ अक्टूबर को शाम को 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में सभी संतभाईयों, संतबहनों, हरिभक्तों की हाजरी में धनतेरस के दिन लक्ष्मीपूजन की विशिष्ट महापूजा पू. हितेनभाई तथा प.पू. वशीभाई द्वारा भक्तिभाव से हुई।

अंत में भरतभाईने सभी भक्तों की सुखाकारी और समृद्ध जीवन के लिये विशिष्ट संकल्प और प्रार्थना की।

Dhanteras Poojan at "Akshardham" Temple, Powai

प.पू. भरतभाई ने अपने आशीष में कहा कि सोना, चांदी, पैसों को हम धन मानकर पूजते है, लेकिन भगवान की दृष्टि अलग होती है। अंतर में शांति और सुख मिले वही सच्चा धन होता है। सभीके प्रति हमें शुभ संकल्प ही रखना चाहिए। किसीने प्रमुखस्वामीजी को पूछा था कि सच्चा धन क्या होता है? तो उन्होंने कहा कि आज तक मेरे जीवन में कभी भी किसीके लिये नकारात्मक भाव नहीं आया वही सच्चा धन है। वैसे हरेक के लिये हमें सकारात्मक विचार रखना है। भगवान हमारे साथ है तो सबकुछ है, अगर उनको आगे नहीं रखेंगे तो जो कुछ भी है वो नहीं के बराबर है। नारायण को रखेंगे तो लक्ष्मीजी आयेंगी। हमारी जितनी भी आमदानी हो उसमें से १०% या ५% भगवान को अर्पण करना जरुरी है। पूरे विश्वास और श्रद्धा के साथ प्रभु में जुडना है। भगवान हरपल मेरे साथ है और वे कभी भी मेरा अहित कर ही नहीं सकते वैसी भावना रखनी है। संतभगवंत साहेबजी एक ही बात बताते है कि भक्तों को राजी रखो। **(१) भजन करना। (२) भगवान को आगे रखकर जीवन जीना। (३) आपस में हरिभक्तों के साथ संबंध ज्यादा बढाये। Team work से** काम करेंगे तो ज्यादा और बेहतर काम होगा। तो साथीदारों के साथ संबंध बढे वही प्रार्थना।

Dhanteras Poojan at "Akshardham" Temple, Powai

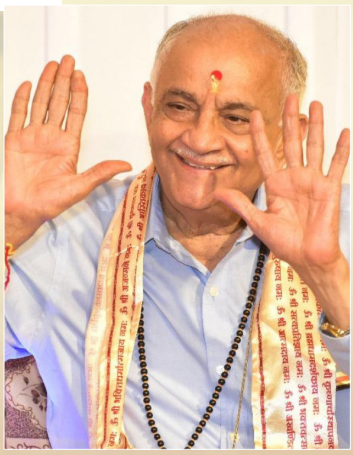

प.पू. वशीभाई ने कहा कि हमें प्राप्ति का केफ होना चाहिए। आज जिसके पास करोड रुपये है लेकिन देह की तकलीफ की वजह से कुछ खा नहीं सकते। इसलिये हमारा सबसे बडा धन हमारा अच्छा स्वास्थ्य है। शरीर अच्छा रहेगा तो हम हर सुख प्राप्त कर पायेंगे। दि. १६ को आयुर्वेदिक दिन वैद्य धन्वंतरी की स्मृति में भी मनाया जाता है। आज के जमाने में नियमित व्यायाम सबसे जरुरी है। दिनकरभाई ८० साल की उम्र में भी हररोज सुबह उठकर पहले व्यायाम करते है। आज मानसिक रुप से भी हरकोई स्वस्थ होना जरुरी है। आज व्यवसायिक क्षेत्र में भी हमारे मन की स्वस्थता की जाँच की जाती है। गुरुहरि काकाजी महाराजने हमें

जो 4 Point Programme दिया है वो हमारे लिये सबसे बडा धन है। काकाजी कहते थे कि आपको सबकुछ मिला है, केवल धुन करो। अन्य कोई सेवा नहीं कर सकते तो स्वरुप के साथ के प्रसंगों की स्मृति करो।

Dhanteras Poojan at "Akshardham" Temple, Powai

भरतभाईने हर बार हमें एक ही आज्ञा दी है कि वाणी में मीठाश रखो। स्वामीजी दास का दास बनने की आज्ञा करते है। हमें हमारापन छोड देना है। कोई दो जन के साथ मैत्री ज्यादा बढाओ। तो सभी हर प्रकार से सुख रहे वही प्रार्थना।

❊ **दूसरे चरण में रविवार, दि. १९ अक्टूबर को अक्षरचौदस निमित्त प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाईने मंदिर के पूजारी प.भ.प्रतीकभाई तथा संतभाईयों, संतबहनों की उपस्थिति में श्री हनुमानजी की विशिष्ट पूजा की।**

Shri Hanumanji Poojan at "Akshardham" Temple, Powai

❊ तीसरे चरण में सोमवार, **दि. २० अक्टूबर** दिवाली के दिन सायं ७ बजे **शारदापूजन-चोपडापूजन निमित्त प.पू. वशीभाईने महापूजा में विधि करवा कर विशिष्ट संकल्प करवाया।**

Sharda Poojan at "Akshardham" Temple, Powai

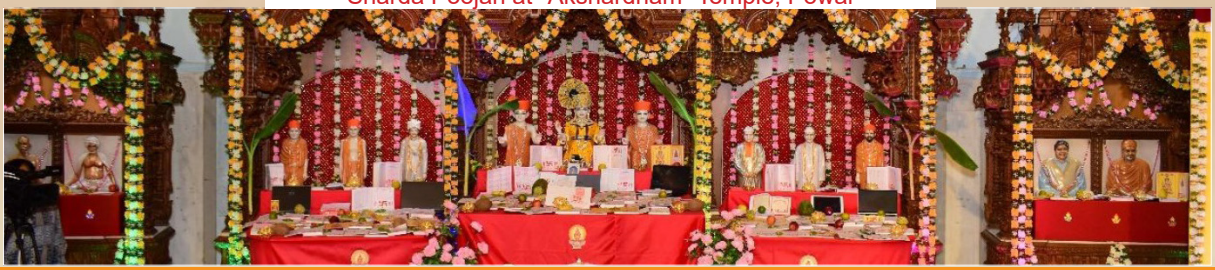

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि एकबार एक भक्त आकर मुझे बोल रहे थे कि हमको मन में कोई बात लग जाये ऐसे प्रसंग भगवान क्यों खडे करते है? मैंने कहा कि अगर हम कोई स्तंभ खडा करते है तब वो बराबर बैठा है या नहीं इसलिये उसे हिलाकर Check करते है। वैसे हम भगवान के भक्त है, सेवा करेंगे तो प्रसंग लायेंगे ही। उसके लिये तीन उपाय बताये है। **(१)** धुन करो। **(२)** हमारे गुरु या भगवदी के पास जाओ। दो सारे साधु और चार हरिभक्त के साथ संबंध करो। **(३)** उस प्रसंग को धीरज से देखना चाहिए। उसके बाद उन्होंने दिनकरभाईने नूतनवर्ष के जो आशीर्वाद दिये है वह पढा।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि आज स्वामिनारायण भगवान स्वयं यहाँ जो हिसाब की किताब रखी है उसमें आशीर्वाद जरुर देंगे, लेकिन भरतभाईने जो तीन बात बताई उसे हमें भूलना नहीं है। ये सब बहुत रहस्य की बातें है। २०० साल पहले स्वामिनारायण भगवानने कहा कि अच्छे अक्षर से हिसाब लिखना। आज तो Computer का जमाना आ गया है। हमने जो हिसाब रखा होगा उसका ही प्रमाण माना जाता है। जो भी व्यवहार का काम करें उसको जरुर से लिखें। आज हम बहुत जल्दबाजी के युग में जी रहे है। तो हम महाराज को आगे रखकर हर कार्य करें वही प्रार्थना।

Diwali Selfie Point at "Akshardham" Temple, Powai

दिवाली के अवसर पर युवकोंने विशिष्ट **Selfie Point** का आयोजन किया था, जिसका सभीने लाभ लिया।

❊ **अंतिम चरण में नूतन वर्ष विक्रम संवत २०८२ के प्रथम दिन बुधवार, दि. २२ अक्टूबर को Megarugas Hall, चंदिवली में सुबह ९.३०** बजे विशेष महापूजा-सत्संग और स्नेहमिलन का कार्यक्रम हुआ।

Special New year Mahapooja at Megarugas Hall, Chandivali

प्रारंभ में प.पू. वशीभाई ने नूतन वर्ष निमित्त महापूजा में सभी भक्तों के सर्वांगी उत्कर्ष के लिये संकल्प और प्रार्थना की। प.पू. भरतभाई ने नूतन वर्ष निमित्त विशिष्ट आशीष दिये।

भजन मंडल के सभी गायकवृंदने विधविध थाल गाकर ठाकोरजी के चरणों में अपना भाव रखा।

१००० से भी ज्यादा व्यंजनों अन्नकूट के रुप में ठाकोरजी और गुणातीत स्वरुपों के आगे कलात्मक तरीके से रखे गये थे। अंत में

संतभाईयों, संतबहनों और हरिभक्तोंने अन्नकूट की विशिष्ट आरती भी की। करीब ८०० हरिभक्तोंने आरती और महाप्रसाद का लाभ लिया।

New year and Annakut celebration at Megarugas Hall, Chandivali

सभी संतबहनें, संतभाईयों, सभी युवकों -युवतीओं, भाभीओंने अन्नकूट की व्यवस्था बहुत ही अच्छे से की। देश-विदेश के कईं हरिभक्तोंने इस स्नेहमिलन समारंभ में विशिष्टरुप से भाग लिया।

उसी प्रकार गुणातीत समाज के अन्य सभी केन्द्रों में भी उत्साहपूर्वक दिवाली और नया साल अन्नकूट उत्सव के साथ मनाया गया।

Annakut celebration at Waukegan Temple, Chicago

Annakut celebration at Marion Street, Chicago

Annakut celebration at Tardeo Mandir

Annakut celebration at Kandivali

Annakut celebration at Sambhaji Nagar

Annakut celebration at Leicester - London

❊ रविवार, दि. २६ अक्टूबर को 'अक्षरधाम', स्वामिनारायण मंदिर, पवई में विशिष्ट International Youth सभा का आयोजन किया गया था, जिसमें देश-विदेश के कई युवकोंने भाग लिया। पवई से पू. हर्षितभाईने शिक्षापत्री पर, शिकागो से प.भ. अमितभाई शाहने गुरुहरि काकाजी महाराजने दी हुई Techniques पर, प.भ. दिव्यांगभाई वजोरने Gokarting Car Development पर बहुत अच्छी जानकारी दी।

अंत में शिकागो से प.पू. दिनकरभाई, पवई से प.पू. भरतभाई तथा प.पू. वशीभाईने विशिष्ट आशीर्वाद दिये।

॥ સ્વામિશ્રીજી ॥

નૂતન વર્ષ નિમિત્ત પરમ પૂજ્ય દિનકરભાઈના આશીર્વાદ

કાર્તિક સુદ ૧, વિક્રમ સંવત ૨૦૮૨
બુધવાર, તા. ૨૨ ઑક્ટોબર, ૨૦૨૫
અન્નકૂટોત્સવ

નૂતન વર્ષની મંગલ પ્રભાતે સંતવર્ય યોગીજી મહારાજ અને ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજની કેવળ કરૂણાથી, સંસ્કારિતાની મોહકતાથી આપણને સહુનેય આ સનાતન રહસ્યજ્ઞાન બક્ષિસમાં મળ્યું છે. આ જ્ઞાન સબીજ, મૂર્તિમાન અને અખંડ છે. જેથી વચનામૃત ગઢડા અંત્ય ૮ પ્રમાણે સદાય સુખિયા જ રહેવાય.

પ્રગટના ઉપાસકો અને આપણે સર્વે ગુણાતીત સમાજવાળા સમગ્ર સત્સંગીઓ વ્યવસ્થિત રીતે ભજન, ભક્તિ અને સત્સંગ કરીએ જ છીએ. ગુરૂહરિ કાકાજીએ સાક્ષાત્ સ્વરૂપોની ઓળખાણ પણ કેવળ કરૂણા કરીને બક્ષિસમાં જ આપી છે, સ્પષ્ટ કરી છે અને પ્ર.બ્ર.પ.પૂ. વશીભાઈ, ભરતભાઈ, પ્રેમસ્વરૂપસ્વામીજી, સંતભગવંત સાહેબજી, ગુરૂજી (મુકુંદજીવનસ્વામીજી), વિજ્ઞાનસ્વામીજી (કંથારિયા મંદિર), બાપુસ્વામીજી (સાંકરદા મંદિર), નિર્મળસ્વામીજી અને મહંતસ્વામીજી આવાં સ્વરૂપોના જોગમાં પણ મૂકી દીધાં છે.

હવે પ્રત્યક્ષ સ્વરૂપોની સિદ્ધાંતિક પ્રસન્નતા મેળવવા માટે નિત્ય પ્રત્યે એક–બે સત્કર્મો કરીએ. એટલે કે આપણા અંગ પ્રમાણે કે આપણને જે સરસ આવડતું હોય કે આપણી જે વિશિષ્ટતા હોય તેવી સેવા અહાહોભાવે, ભીડો ખમીને, ફળની આસક્તિ વગર કે કોઈપણ પ્રકારની ફરિયાદ વગર સાક્ષાત્ સ્વરૂપને અંતર્યામી ને સર્વજ્ઞ સમજી, નિરપેક્ષભાવે અર્પણ કરીએ તો અમાપ બળ મળશે. જેથી આપણે સુહૃદભાવ રાખવા શક્તિશાળી બનીશું. આપણો એ સહજ સ્વભાવ બની જશે.

તો અનાદિ મૂળ અક્ષરમૂર્તિ ગુણાતીતાનંદસ્વામીજી તો કહી ગયા છે કે સંબંધવાળા સર્વને ગુણાતીત કરવા જ છે ને યોગીજી મહારાજ પણ ભારપૂર્વક કેવળ કૃપા કરીને જ સંબંધવાળા સર્વ મુક્તોને મોજમાં જ અક્ષરધામ અર્પી ગયા છે. તે માટે પણ એવા ભગવદીઓનો પ્રસંગ કરવા અનિવાર્ય ગણાવ્યું છે.

શ્રેયાર્થી સાધકોને વહેલામાં વહેલી તકે 'અર્થં સાધયામિ, વા દેહં પાતયામિ' તે રીતે આ ગુણાતીત રહસ્યજ્ઞાનને જીવનમાં મનન, ચિંતન, નિદિધ્યાસ અને સાક્ષાત્કાર કરી લેવા એવી સુરુચિ રાખવી તેવો અંતિમ આદેશ પણ આપી ગયા અને દુર્લભમાં દુર્લભ એવું એકાંતિકપણું, સુહૃદભાવ, અંદરોઅંદર પ્રેમ અને એકાત્મતાના સિદ્ધાંત તદ્દન સુલભ બનાવી ગયા છે.

સહુ દિવ્ય સંતો, વ્રતધારી સાધકો, સંતબહેનો, ગૃહસ્થોને આવાં ગુણાતીત સ્વરૂપો આખુંય વર્ષ અને સદાયને માટે સુખીયા રાખી અક્ષરધામનું સુખ આપતાં જ રહે તેવી સુહૃદ પ્રાર્થનાઓ...

શુભમ્ ભવતુ... મંગલમ્ ભવતુ...

જય સ્વામિનારાયણ ! અક્ષરપુરૂષોત્તમ મહારાજની જય જય જય !!!

સહુ સંતભાઈઓ તથા મુક્તો વતી દિનકરના ભાવભર્યા જય શ્રી સ્વામિનારાયણ...

॥ સ્વામિશ્રીજી ॥

નૂતનવર્ષ નિમિત્ત પરમ પૂજ્ય ભરતભાઈના આશીર્વાદ

કાર્તિક સુદ ૧, વિક્રમ સંવત ૨૦૮૨
બુધવાર, તા. ૨૨ ઑક્ટોબર, ૨૦૨૫
નૂતન વર્ષ – અન્નકૂટોત્સવ

નૂતનવર્ષ – વિક્રમ સંવત ૨૦૮૨ના શુભ મંગલકારી દિનના સુપ્રભાતે
પ્રભુચરણે અંતરની પ્રાર્થનાઓ અર્પણ કરીને ધન્યતા અનુભવીએ છીએ...
દીવાળી આવે છે... નવા વર્ષનો નૂતન પ્રકાશ લાવે છે. નૂતન વર્ષે સતત બદલાતા સંસારના પ્રવાહમાં અસ્થિરતા જીવનના સર્વ ક્ષેત્રે વ્યાપી રહી છે ત્યારે...
ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજે ઈ.સ. ૧૯૮૩, તા. ૯ માર્ચના પત્રમાં કહ્યું છે કે
'કરોડો જન્મ થયા છતાં મૂળ અજ્ઞાન ટળ્યું નહીં તો મૂળ અવિદ્યા તો ટળે જ ક્યાંથી?
પણ ગુણાતીત જ્ઞાનમાં બન્ને ટળે તેવું બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજ સુગમ કરી ગયા છે ને મોજ આપી છે.
તો આંતરિક સુહૃદભાવનો હવે સહુ ખૂબ અંતર્દૃષ્ટિ કરી કળશ ચઢાવવા માંડે તે જ અભીપ્સા છે.'
કાકાજીના કહ્યા મુજબ સ્વા.વા.પ્ર. ૪/૮૫માં ગુણાતીતાનંદસ્વામીએ કહ્યું છે કે
'મૂળ અજ્ઞાન તે શું? જે, ત્રણ દેહથી જુદું પોતાનું સ્વરૂપ સમજીને ભક્તિ ન થાય એ જ છે' અને
'સ્વા.વા.પ્ર. ૧૨/૧૬૯ મુજબ પંચવિષયના સંકલ્પ ન થાય અને કોઈ હરિજનનો અવગુણ ન આવે તો અવિદ્યા ટળી કહેવાય.'
તો નિરંતર સ્થિરતા પ્રાપ્ત કરવા... મૂળ અજ્ઞાન ને અવિદ્યા ટાળવા... આંતરિક સુહૃદભાવ દૃઢ કરીએ... કુટુંબભાવ દૃઢ કરીએ... સંવાદિતા પ્રગટાવીએ...
જો આપણે એમ કરીશું તો વિષમ પરિસ્થિતિમાં પણ આપણે સહુ
ભગવાન સ્વામિનારાયણ અને ગુરૂહરિએ આપેલી મોજ માણતા રહીશું ને
અખંડ અક્ષરધામમાં દેહ છતાં ભગવાન ને ભગવાનના ભક્તોની સેવા માહાત્મ્યસહિત કરતા જ રહીશું...
એવી સ્થિતિ સહુને સુલભ થાય એ જ પ્રાર્થના સહ
સહુ સુખી રહો... સ્વસ્થ રહો... પ્રસન્ન રહો...
જય સ્વામિનારાયણ....

તા. ૧/૧૦/૨૦૨૫

।। સ્વામિશ્રીજી ।।

પરમ પૂજ્ય દિનકરભાઈના ૮૨મા પ્રાગટ્યપર્વે...

પરમ પૂજ્ય દિનકરભાઈ,
ગુરૂહરિ કાકાજીના માનીતા માનસપૂત,
આવ્યા ધરા પર આજે, બની સહજાનંદી દૂત.
કાકાજી સ્નેહલસિંધુ,
તમે રહ્યા એ સિંધુમાંહી બનીને અલ્પ બિંદુ,
પણ એ બિંદુ અમૃત સિંધુનું, પધાર્યા શરદપૂનમે લઈ ઓજસ એ પૂર્ણ ઈન્દુનું.
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पुर्णमुदच्यते, पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।
ધન્ય થયાં સહુ એ, જે પામ્યાં સંબંધ આપ વતે.

બિંદુ વિસ્તરીને થયું વર્તુળ, પણ ક્યારેય વિસર્યું નહીં નિજ અસ્તિત્વનું એ મૂળ,
એ વર્તુળને રહ્યો હંમેશાં, બિંદુનો જ આધાર, બિંદુનો જ આકાર !
વિસ્તર્યો પરિઘ પણ ત્રિજ્યા બિંદુ તણી,
સમાવ્યાં સૌને વર્તુળમાં પણ દૃષ્ટિ કેન્દ્ર ભણી.
કેન્દ્રમાં એક કાકાજી, જેમ ગુણાતીતની શ્રીજી ભણી !
વર્તુળની જેમ જ આપને ના કોઈ અંગત વિચાર કે ના આગવો કોઈ આકાર,
કાકાજીમાંથી જે આવે એ જ આકાર–આધાર !
વર્તુળની જેમ જ આપને ન કોઈ ખૂણો કે ખાંચો,
પ્રભુ સંબંધનો માપદંડ, એ જ સંબંધ એક સાચો.
વર્તુળ ફેલાય કે સંકોચાય પણ આકાર ક્યારેય ન બદલાય,
ત્રિજ્યાથી પરિઘ અને પરિઘથી વર્તુળ ગોળાકાર જ ફેલાય.
તેમ આપના સંબંધે સૌ માહાત્મ્યમાં જ રેલાય,
માહાત્મ્યથી જ હંમેશાં સેવા–ભક્તિ–સત્સંગ થાય.
એવું અજબ ખેંચાણ છે આપનું, એવું વિશિષ્ટ પ્રશિક્ષણ છે આપનું,
એવી આગવી તાલીમ છે આપની,
નિજ વર્તનથી જ શીખવાડો એવી વિરલ રીતિ છે આપની.
હે વહાલા દિનકરભાઈ,
આજે આપના પ્રાગટ્યદિને, માંગીએ આશિષ આપ કને
કે અમ વર્તન એવું થાય કે આપની પ્રસન્નતા વરસી જાય,
તો આમ જીવન ધન્ય બને !
વર્તુળની જેમ જ જીવન કેન્દ્રગામી બને,
ફેલાઈએ કે રેલાઈએ, વિસ્તરીએ કે સંકોચાઈએ,
પણ આપની જેમ જ હંમેશાં માહાત્મ્ય ને દાસત્વમાં ક્યારે ઊણાં ન ઉતરીએ,
અમને નીરખીને આપનું વદન હંમેશાં હસતું રહે, અમને સંભારી આપનું હૈયું મલકંતું રહે !

'અક્ષરધામ' મંદિર, પવઈના સંતભાઈઓ, સંતબહેનો તથા મુક્તસમાજના
જય શ્રી સ્વામિનારાયણ...

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) P.P. Dinkarbhai's 81st Pragatya Din celebration at DesPlaines Temple, Chicago on 4th and 5th October. (2) P.P. Vashibhai, P. Ashwinbhai's Paris tour from 5th October to 10th October. (3) Bhajan Sandhya on 7th October at "Akshardham" Temple, Powai. (4) Sharad Purnima - A.M.A.M. Gunatitanandswami's 241st, P.P. Dinkarbhai's 81st, P.P. Arunbhai's 72nd Pragatya Din Celebaration and B.S. Swamiji, P.P. Premswaroopswamiji and other Saints' 61st Bhagvati Dikshadin celebration at "Akshardham" Temple, Powai on 10th October. (5) "Sardar Patel Run for Unity" organized by Jalaja Foundation on 12th October. (6) Celebrations of Diwali Festivals at "Akshardham" Temple, Powai and Megarugas Hall, Chandivali from 18th to 22nd October. (7) International Youth Sabha at "Akshardham" Temple, Powai on 26th October. (8) Article for P.P. Dinkarbhai on his 81st Pragatya Din on 1st October. (9) Diwali and New Year Blessings by P.P. Dinkarbhai and P.P. Bharatbhai on 22nd October.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta